गधे की हजामत

पुरानी बात है। बगदाद में अली नाम का एक हज्जाम रहता था। वह अपने पेशे में बेजोड़ था। वह खास-खास लोगों की ही हजामत बनाता था। उसके ग्राहकों में बगदाद के खलीफा और शाही कर्मचारी शामिल थे।

एक दिन अली के घर में जलाने की लकड़ी नहीं थी। इसलिए वह किसी लकड़हारे के इन्तज़ार में अपने दरवाज़े के सामने बैठ गया। तभी एक बूढ़ा लकड़हारा नज़र आया तो अली ने उसे पुकारा और पूछा, "बताओ, तुम्हारे गधे पर लदी इस तमाम लकड़ी के क्या तुम्हें पाँच दिनार मंज़ूर हैं?"

बूढ़े लकड़हारे ने "हाँ" कर दी और गधे पर से सारी लकड़ियाँ उतार दीं। जब उसने रकम माँगी तो अली ने कहा, "पर मैंने तो तुम से गधे पर लदी पूरी लकड़ी के दाम तय किए थे। वह क्या लकड़ी नहीं है? वह गधे की जीन – वह भी तो दो।" "यह कैसे हो सकता है? यह तो सरासर लूट है।" बूढ़े ने कहा। अली गुस्से में आ गया और उसने बूढ़े को धक्का मारकर, गधे की जीन खींचकर निकाल ली। और रकम फेंककर दरवाज़ा बन्द कर दिया।

बूढ़ा लकड़हारा बड़ा दुखी हुआ। रोते सिसकते हुए वह काज़ी के पास गया। काज़ी ने उसकी बात सुनी, और अली के हक में फैसला दिया। क्योंकि काज़ी की हजामत भी अली ही बनाता था।

बूढ़ा लकड़हारा निराश हो गया। वह बाज़ार में एक जगह बैठकर सुबकने लगा। उसी वक्त मुल्ला नसरुद्दीन का वहाँ से गुज़रना हुआ। मुल्ला ने उसकी उदासी का कारण पूछा। बूढ़े लकड़हारे ने उसे अपनी गाथा कह सुनाई। मुल्ला ने कहा, "अरे, इत्ती-सी बात के लिए इतने उदास हो? वैसे फैसला तो हर जगह अली के हक में ही जाएगा। बहरहाल, इन्साफ तो तुम्हें मिलना ही चाहिए। तुम ज़रा ध्यान से मेरी बात सुनो..."

मुल्ला ने उसे अपनी योजना बताई और कहा, "अबकी सीधे खलीफा के पास जाना, और कहीं नहीं। तुम्हें इन्साफ ज़रूर मिलेगा।"

बूढ़ा लकड़हारा मुस्कुरा उठा और उसे सलाम करते हुए वहाँ से चला गया। ऐसे ही कुछ दिन बीत गए। एक दिन अचानक लकड़हारा अली के यहाँ गया और उससे बोला, "मेरी और मेरे दोस्त की हजामत बनाने का तुम क्या लोगे?"

"चार दिनार।" अली ने चटाक से उत्तर दिया, "पूरे दाम मिल जाने पर तुम्हारी और तुम्हारे दोस्त की तसल्ली-बख्श हजामत बनाऊँगा।"

"ठीक है। ये लो चार दिनार। पहले मेरी हजामत बनाओ।" बूढ़े ने उसे रकम देते हुए कहा।

अली ने उसकी हजामत बनाने के बाद पूछा, "तुम्हारा दोस्त कहाँ है?"

"बाहर खड़ा है। अभी लाता हूँ।" बूढ़े ने कहा और अपने गधे की रस्सी थामे भीतर ले आया।

"यह क्या? तुम इस गधे को अन्दर क्यों ले आए?" अली ने हैरानी से पूछा।

"यह मेरा दोस्त है। तुमने रकम ले ली है। अब बिना देर किए फटाफट इसकी हजामत बना दो।" बूढ़े ने कहा।

"क्या कहा, गधे की हजामत बनाऊँ? यहाँ से चलते बनो, वरना खाल उधेड़ दूँगा तुम्हारी।" अली ने गुस्से से कहा।

लकड़हारे ने तुरन्त जाकर इसकी शिकायत खलीफा से कर दी। खलीफा ने अली को दरबार में पेश करवाया। उसने अली से पूछा, "इसके दोस्त की हजामत बनाने से तुम क्यों मुकर रहे हो जबकि उसके लिए दाम भी वसूल कर चुके हो?" "हुज़ूर, आपने जो फरमाया सही है। लेकिन आदमी का दोस्त गधा हो और गधे की हजामत बनाई जाए, ऐसा तो कभी सुना नहीं।" अली ने कहा।

"ठीक कहते हो। इसी तरह जलाने की लकड़ी के साथ गधे की जीन को माँगना भी हमने पहले कभी नहीं सुना था। तुम देर मत करो। दरबार का समय खराब हो रहा है। फटाफट अपना काम निपटा दो।" खलीफा ने कहा।

अली के लिए बचने का कोई रास्ता न था। उसने अपना उस्तरा सम्भाला और लगा धीरे-धीरे गधे पर फिराने। खलीफा समेत सभी दरबारी उस पर ठठाकर हँस पड़े। अली अपनी रोनी सूरत के साथ लगा रहा।

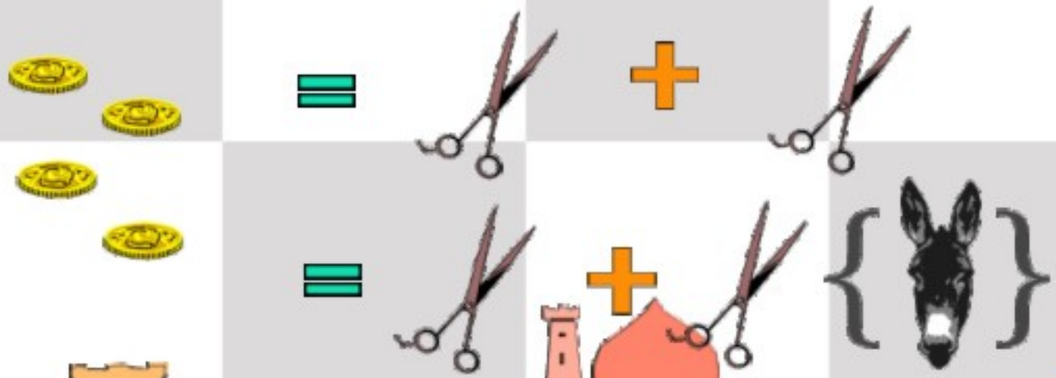

चित्रः आशुतोष भारद्वाज